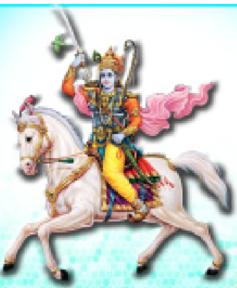

भगवान श्री कल्कि

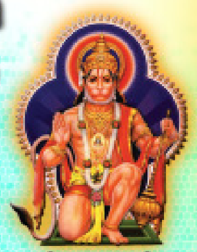

श्री हनुमान जी

श्री कल्कि बाल वाटिका

मासिक पत्रिका

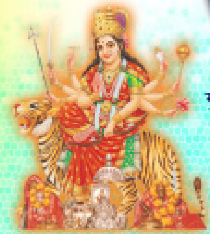

मां वैष्णवी

गुरुदेव लक्ष्मीनारायण जी

अंक 9 कुल पृष्ठ,16

घृणा पाप से करो पापी से नहीं—अज्ञात

मूल्य मात्र 10 रुपए मास सितंबर 2014

अंदर के पृष्ठों में

* भगवान श्री कल्कि की रामलीला में सवारी ...... पृ. 2

* यमुना तट पर सुप्त तीर्थ जागरण हेतु चलता फिरता श्री कल्कि जयंती महोत्सव ...... पृ. 2

* जहाँ से चला था वहीं पहुँचने के आसार बने ...... पृ. 3

* संभल में श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ एवम् श्री कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशाला ..... पृ. 15

* जब संतान प्राप्ति का योग बना 4

* आभार प्रभु श्री कल्कि......4

* स्वप्न महत्वपूर्ण क्यों ? 5-7

* जब अपोलो हास्पिटिल ने कहा दिमाग के ऑपरेशन की जरूरत नहीं 8 कल्कि जी के उपचार हैं या चमत्कार.

* कफन की तैयारी कर ले......8

* प्रचार चाहिए-प्रचार चाहिए-कल्कि 9-11 जी को प्रगट होने के लिए प्रचार चाहिए

* मेरी फंसी ज्वैलरी निकली-ससुर की निकल कर फंसी.....12

* सम्भल सहस्त्रनाम हवन के संकल्प से वर्षों पुरानी ज्वैलरी मिली....13

* माँओं को एक बार तो दुख (आंसू बहाना/रोना) झेलना ही पड़ता है...14

* कल्कि साहित्य समाप्ति के कगार पर

* जब भगवान स्वयं साहित्य बांटने चल दिए—स्वप्नानुभव श्री रोहित गुप्त 15

* गुरु बालमुकुन्द गदा उठाय करत प्रचार-प्रचार श्री कल्कि ने लीन्हा अब अवतार

मैकाले के सपनों का भारत सिर्फ खून हिंदुस्तानी बाकी सब विलायती

श्री हनुमान जी का भारत

सम्भल में श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ ने सम्भलवासिनी सुप्रीम कोर्ट की वकील ने हल्लू सराय चामुंडा मंदिर सम्भल में ही खोली ऑडियो-वीडियो द्वारा नए विचारों की तकनीक लिए संस्कार रोपण

श्री कल्कि बाल वाटिका

संचालिका सुश्री मुक्ता शर्मा बच्चों के आई कार्ड बनाने के लिए उनकी नाम, पढ़ाई, मोबाइल नं. पूछते हुए

आगामी अंकों में पढ़ें

* यही जो है जिंदगी में जैसे संजीव कुमार से माली के द्वारा रुपया लिया ऐसे ही भगवान श्री कल्कि ने आकांक्षा चौधरी से कुम्हार के रूप में विशी चौधरी से डॉक्टर के द्वारा, आभा गुप्ता से सर्जन के द्वारा लिया

* कल्कि जी के दस प्रतिशत शेयर से डूबा हुआ रुपया निकला—कोलकाता मेल

* कल्कि जी के उपचारों से सी.ए. का दूसरा ग्रुप एक बार में ही क्लियर हुआ—अर्पित गोयल (महावीर नगर) 9873745909

* कराना (शामली) में श्री विनोद कुमार द्वारा अनुभव को हल्का लेने पर जान गंवाई—श्री वरूण गुप्त, एडवोकेट 9368616464

* जब स्वप्नानुभव में भगवान ने गाय का घी,अन्न का भोग एवं घर के बाहर सुरक्षा कवच लगाना दिखाया- रोहित गुप्त 9899499848

* घुमाकर रुपया क्यों मांगते हो सीधा महालक्ष्मी से क्यों नहीं मांगते

* यह संसार भगवान की माया से बना है

* स्वयं पर जुर्माना : एक मजबूत हथियार—वरूण चौधरी कोलकाता

* मंदिर के ऊपर अष्ट धातु या सोने की रॉड लगाकर अपनी परेशानियों का देवी देवताओं द्वारा हल पाएं—स्वप्नानुभव * रोहित गुप्त 9899499848

अष्टधातु रॉड मात्र 421 रुपए में उपलब्ध संपर्क सुश्री रश्मि गुप्त—9711108050

संचालिका सुश्री मुक्ता शर्मा एल.सी.डी. पर बच्चों को बाल रूप श्री राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न ने गुरुकुल जाते हुए दृश्य का अवलोकन कराते हुए, कर्म की शिक्षा देते हुए

भगवान श्री कल्कि की रामलीला में सवारी 25 सितंबर से 4 अक्टूबर 2014 तक
कृष्ण अवतार की माखन लीला कल्कि अवतार में बनी स्वप्न वाणी जागृत अनुभव लीला

भगवान श्री कल्कि की शोभायात्रा बड़ी रामलीला (आसफ अली रोड, रामलीला ग्राउन्ड) में 11 दिन होती है। इनके द्वारा बड़े पैमाने पर दोपहर व रात में (प्रतिदिन दो बार) सवारी दिल्ली के प्रमुख बाजारों से निकलती है एवं छोटी रामलीला (परेड ग्राउण्ड वाली) जिनमें आठ से दस लाख भक्त सपरिवार भगवान के विभिन्न सुंदर रूपों के दर्शन करते हैं। श्री कल्कि बाल वाटिका (रामलीला सवारी प्रभारी) श्री हितेश गुप्ता (सुपुत्र बैकुंठवासी श्री विनोद गुप्ता, हाथी दांतवाले) के तत्वाधान में प्रतिवर्ष की भाँति 25 सितंबर से 4 अक्टूबर 2014 तक निकालने का कार्यक्रम है।

रथं कल्कि दृष्टवा पुनर्जन्म न विद्यते (रथ पर सवार भगवान कल्कि के दर्शन करने से पुनर्जन्म नहीं होता)

सुर वृन्द नमित पद कंज द्वन्द, दर्शन से कट रहे यम के फन्द

(भगवान श्री कल्कि के दोनों चरण कमल के समान हैं जिनको देवता भी प्रणाम करते हैं क्योंकि उनके दर्शन मात्र से यमराज के फन्दे कट जाते हैं।)

है कोटि जन्म अधराशि नाश, कर रहे अध्रि-हृदि तिमिर ह्रास

(भगवान श्री कल्कि की झांकी का दर्शन करोड़ों जन्म के इकट्ठे पापों को भस्म कर देता है तथा हृदय के अंधकार को दूर कर देताहै।)

इस शोभा यात्रा की व्यवस्था के लिए निम्नलिखित मदों में अनुमानित न्यौछावर—

1. बड़ी रामलीला शुल्क...................... 5,100.00
2. छोटी रामलीला शुल्क 3,500.00
3. ट्रक-ट्राली किराया........................ 25,000.00
4. बिजली का जनरेटर किराया 7,100.00
5. श्री कल्कि भगवान का साहित्य वितरण 6,900.00
6. दैनिक श्रमिक व अन्य खर्च प्रतिदिन............... 2,500.00
7. फूलों की झांकी प्रतिदिन.................. 5,300.00
8. श्री कल्कि भगवान का प्रसाद वितरण प्रतिदिन.... 1,800.00
9. श्री कल्कि भगवान का शृंगार 12 दिन (आर्टिस्ट द्वारा मेकअप)................3,500.00

आपका सपरिवार भगवान का दर्शन हमारे लिए सहयोग से भी ज्यादा अमूल्य होगा।

आप अपना सहयोग उपरोक्त सत्कार्यों में किसी एक मद में पूरा या हिस्से में देना चाहें तो आपके नाम से अथवा गुप्त सहर्ष स्वीकार करके उसी मद में लगाया जाएगा। श्री कल्कि बाल वाटिका के परिवार वाले सदस्य एवम् बालक दस वर्ष से बड़े, झाँकी पर स्वरूपों में यदि भाग लेना चाहते हैं तो नि:संकोच श्री रोहित गुप्ता (सुपुत्र बैकुंठवासी श्री विनोद गुप्ता, हाथी दांतवाले) से संपर्क कर सकते हैं। आप अपना बहुमूल्य सहयोग रामलीला सवारी प्रभार समिति के किसी भी सदस्य को भेज सकते हैं या नीचे दिये फोन पर बता सकते हैं।

श्रीयोगेश गुप्ता 23973383 — श्री हितेश गुप्ता (सुपुत्र बैकुंठवासी श्री विनोद गुप्ता, हाथी दांतवाले) 9899499848 — श्री आदर्श सिंघल 9818525601

NBT नवभारत टाइम्स

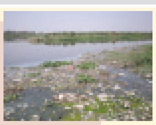

यमुना बनेगी साबरमती

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यमुना नदी को गुजरात की साबरमती बनाने की तैयारी शुरू कर दी है। गंगा की तरह यमुना की सफाई के लिए भी केन्द्र सरकार ने 25 करोड़ का बजट पास किया है।

यमुना तट पर सुप्त तीर्थ जागरण हेतु चलता फिरता श्री कल्कि जयंती महोत्सव
7 सितंबर रविवार 2014 को

असंभव को संभव करने वाला संभल में होने वाला श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ 7 सितंबर 2014 को इन्द्रपस्थ यमुना तट पर दो कुण्डीय यज्ञ संकीर्तन, सत्संग प्रात: 5 बजे से 8 बजे तक लघु भंडारे के रूप में है।

*** यमुना महारानी को मर्दाना व जनाना वस्त्र, सीधा, पानी, धूप, मौली के लिये सम्पर्क करें- श्री राजेश जी-8860666461**

स्थान: सागर में नैया डगमग डोले को सहारा देने वाली यमराज की बहन यमुना महारानी के घाट न० 23 पर

आपके द्वारा किया जाने वाला दो कुण्डीय श्री कल्कि सहस्त्रनाम-बगलामुखी यज्ञ-संकीर्तन-भण्डारे का स्वयं संपूर्ण से भी ज्यादा फल चाहते हैं तो अपने हिस्से से भी ज्यादा सहयोग (सामान अथवा नगद रूपया) यमुना तीर्थ के लिये ऊपर लिखे तीन प्रभारियों में से किसी को भी एव ं सम्भल गंगा तीर्थ के लिये सुश्री इंदु बंसल, श्री सुनील गुप्त (सुश्री सुषमा गुप्त के भाई) अथवा मामाजी को दे सकते हैं। संभल तीर्थ की तरह यमुना तीर्थ महोत्सव में आने जाने पर समय की कोई पाबंदी नहीं है। पहली आरती हवन के बाद एवं दूसरी आरती कीर्तन के बाद होगी।

यमुना तट पर श्री कल्कि सहस्त्रनाम - सत्संग - संकीर्तन प्रभारी

श्री अशोक-संजू गड़ोदिया- 9312539397 — श्री राकेश-सुरभि अग्रवाल- 9810654193 — कु० अक्षय गड़ोदिया 9910006788

विशिष्ट जानकारी अथवा संतुष्ट न होने पर मामाजी 011-23973383

चढ़ने में मशक्कत
उतरना आसान

जहाँ से चला था वहीं पहुँचने के आसार बने

(ब्रह्माण्ड अंधा है/कल्कि जी अनुभव (चार प्रकार के) देने के बाद कलियुग के आगे मजबूर हैं) भाग-2

-श्री राहुल अग्रवाल मो॰ 0901980819

मैं 18 वर्ष का था जब मैंने दुकान जाना शुरु किया। मैं वहाँ जाता और गोदाम पर मजदूरों की तरह काम करता था। बहुत समय तक मैं एक स्टेपनी की तरह इस्तमाल होता रहा। मैं बहुत परेशान था। मुझे लगता था कि मेरा कोई वजूद नहीं है। मैं जीवन में क्या करूंगा, कहाँ से पैसे कमाऊँगा, कहाँ से गृहस्थी चलाऊँगा।

फिर मुझे मौसाजी के द्वारा बताया श्री हनुमान जी को गुरु बनाकर युगावतार भगवान श्री कल्कि जी का असम्भव को सम्भव करने वाला सहारा मिला। सत्य मानें यह बिल्कुल ऐसा था जैसे डूबते हुए को तिनके का सहारा।

कल्कि जी की कृपा से मुझे मौसाजी ने मुझे भगवान श्री राम की राम लीला, श्री कृष्ण की माखन लीला व प्रभु श्री कल्कि की 4 प्रकार की अनुभव लीला बताई-1. स्वप्नानुभव, 2. वाणी अनुभव, 3. आखों के आगे से फिल्म की तरह कोई चित्रण होना व 4. मानसिक अनुभव (अर्थात जो शुभ कार्य करने जैसे हवन, नाम जाप, प्रचार-व्यवसाय की श्रेष्ठता के लिये कार्य करना उसमें आलस्य लापरवाही बिल्कुल न करना व उनके समय समय पर संकल्प-उपचार बताए)। कमाल है साथियों कुछ ही समय बाद मैं अपने गोदाम से अपनी बन्द पड़ी दूसरी दुकान पर बैठने लगा। मेरा आत्म विश्वास बहुत बढ़ गया। मैंने अपनी सेल्स में कल्कि जी को 1 त्र का पार्टनर बनाया। मैं दुकान पर बहुत अच्छी तरह से दुकानदारी करने लगा। अपनी पहली दुकान से भी ज्यादा व्यापार करने लगा जिसपर मेरे पापा-भाई बैठते थे। मैं बहुत खुश था ज्यादा क्या कहूँ मैंने श्री हनुमान जी, दुर्गा जी, श्री कल्कि जी की असम्भव को सम्भव करने वाली अनुभव लीला द्वारा अपनी भाभी जिनका डाक्टरों ने 5 बार आई.ओ. डब्ल्यू कराया और बताया कि इन्हें शिशु धारण करने की क्षमता नहीं है। **उनको भी मेरे श्री कल्कि जी ने संकल्प-उपचारों अनुभवों द्वारा संतान प्राप्ति का योग बना दिया जो प्रेरणा दायक कहानियाँ पुस्तक में पृष्ठ न॰ 257 पर भी छपा है और इस पत्रिका में पृष्ठ 4 पर छपा है।** कुछ समय बहुत अच्छा चला। मैं संकल्प उपचार हवन जाप करता और मौसाजी के बताये तरीके से पिताजी के साथ मिलकर कल्कि जी के साहित्य व प्रचार का काम करता था।

साथियों जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया मैं भी मौसाजी की तरह कल्कि जी को ऐसा भुला (जिन्होंने आपको पहले लेखों में बताया कि उनके कनस्तर में आटा नहीं रहा) वैसे ही कलियुग ने ऐसी मार मारी कि हमने (पिताजी-पापा-मैंने) वह दुकान बेच दी। साथियों देखते ही देखते मैं मायावी जाल की तरह पहले की तरह अपंग हो गया। मैं अपने बड़े भाई की दुकान पर बैठने लगा कि **पहले जैसे वैभव तो मेरे भाग्य में है ही सदा बने रहेंगे कहाँ जाऐंगे।** कैश सेल तो मिली लेकिन मैं एक बैंक कैशियर की भांति बन गया। मौसाजी जब भी मुझसे अथवा पापा जी को आगाह करने (बताने) दोबारा हमारी दुकान पर आये लेकिन यह मेरी भूल थी, लापरवाही थी कि मैंने कल्कि जी का दामन छोड़ सुख की होड़ में लग गया। आज मैं भी मौसा जी की तरह फिर से वही दो राहे पर खड़ा हो गया जैसे पहले था लेकिन अब निश्चित हूँ कि समय की क्रूरता से बचने के लिये आलस्य, भावुकता, क्रोध, अहंकार से बचता हुआ मेरे कुल देव श्याम बाबा, श्री हनुमान जी, ठाकुर रामकृष्ण परमहंस, माँ दुर्गा, भगवान श्री कल्कि की कृपा से मौसा जी की तरह वहीं उचाईयाँ पानी शुरु कर दी हैं और करके रहूँगा जैसा श्री कल्कि मुझ से चाहते हैं...... आपबीती के लिए देखें पृष्ठ 4

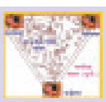

संभल में श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ एवम् श्री कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशाला 21 सितंबर 2014 को माँ चामुंडा मंदिर हल्लू सराय में

संभल सहस्त्रनाम हवन में जाने हेतु नोएडा तथा पूर्वी दिल्ली के लिए ए.सी. बस की बुकिंग के लिए उत्सव से एक सप्ताह पहले संपर्क करें सुश्री मुक्ता शर्मा (एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट)—9811134378 बन पड़े तो सीट बुकिंग के रुपए देने का कष्ट करें बस वाले को एडवांस देना पड़ता है। बस जाते और आते समय पर चलेगी।

सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

दिनांक : शनिवार 6 सितंबर 2014
स्थान : मामाजी बी-2, बहादुर अपार्टमन्ट, सिविल लाईन्स, नई दिल्ली
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री कल्कि बाल वाटिका:- (मामाजी)
बन पड़े तो सही आइ. सी. यू. उपचार जानने के लिए अपने अनुभव लिखकर डुप्लीकेट अथवा फोटो कॉपी कराकर लाएं

दिनांक : शनिवार 13 सितंबर एवं 18 अक्टूबर 2014
स्थान : जी-3 थर्ड फ्लोर,मित्रद्वीप अपार्टमेंट पटपड़गंज दिल्ली-92
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री सुनील गर्ग, सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)
संचालिका- सुश्री मेघना गोयल (913677829)

जब संतान प्राप्ति का योग बना

.......पृष्ठ 3 का शेष

आपबीती—सुश्री रूचि अग्रवाल
मार्गदर्शक–राहुल अग्रवाल 9891879718

मेरी सन् 2004 में शादी हुई थी, मेरे ससुराल में भगवान कृष्ण की मान्यता है। जैसा हर गृहस्थी में होता है कि इस साल बेटा या बेटी हो, उससे मैं वंचित रही। डाक्टरों को बहुत बार दिखाया, सब कुछ नार्मल होते हुए भी 5 बार आई.ओ. डब्ल्यू. कराया लेकिन पोजिटिव नहीं रहा और एक बार पोजिटिव भी रहा किन्तु फिर भी कामयाब न रहा। मेरे देवर श्री कल्कि भगवान को मनते हैं उन्होंने मुझसे कहा कि भाभी आप श्री कल्कि की माला और उपचार करके तो देखो, आप कहें तो मैं इस विषय में मौसाजी से बात करके देखता हूँ।

मौसाजी ने सलाह दी कि आप पहले किसी विद्वान् से यह पूछें कि कौन–सा ग्रह ऐसा है जो हमारे घर में शिशु आने से रोक रहा है। उसके बाद ही भगवान श्री कल्कि के नाम जाप के साथ उस ग्रह के स्वामी को हम उसका भाग यह कहकर दें कि हमें कल्कि जी का काम करना है तो आपको अवश्य सफलता मिलेगी। उसके बाद आप उपचार करें। करने वाले भगवान हैं मैं तो सिर्फ आपको अजमाया हुआ रास्ता बता रहा हूँ। उस पर भैय्या ने ऐसा ही किया और मुझे उस पर जो उपचार बताये वह मैंने 20 मई, 2006 से करने शुरू किए।

उपचारों के बाद भगवान श्री कल्कि की कृपा से जनवरी 2007 में मुझे शिशु की प्राप्ति हुई। जिस दिन से डॉक्टर ने मुझे पोजिटिव बताना शुरू किया और जैसे–जैसे समय आगे बढ़ा महीने पर महीने बीतने लगे मेरा स्नेह, विश्वास श्री कल्कि नारायण के साथ उन सभी देवी–देवताओं के साथ तो बढ़ा। लेकिन इस दौरान कल्कि जी ने जो मुझे अनुभव दिये और रास्ता दिखाया, भैय्या मौसाजी से उसका फौरन अर्थ व उपचार पूछ लेते थे। उससे मेरा भगवान श्री कल्कि और उनके उपचारों में अटूट श्रद्धा और विश्वास हो गया। मैंने पाया जैसे माँ–बाप अपने बच्चों का ख्याल रखते हैं उसी प्रकार कल्कि जी मेरा ख्याल रख रहे हैं।

उपचार—

1.मंगलवार और शनिवार को हनुमान जी के चरणों में (सीधे पैरे की उंगुलियों में 11 बार फिर उल्टे पैर की उंगुलियों में 11 बार) सिन्दूर लगाना '3ॐ हनुमते नमः' का जाप करते हुए। फिर घी का दीपक जलाकर हनुमान जी व कल्कि जी की आरती करना। कटोरी का जल आरती पर घुमाकर अपने ऊपर छिड़क कर फिर आरती लेकर प्रार्थना बोला—हे हनुमान जी मेरी दुराचारी शक्तियों से रक्षा करो—मुझे सन्तान प्राप्ति कराएं मुझे कल्कि जी का काम करना है।

2.गाय माता का भोजन निकालना (चार रोटी पर सब्जी/चीनी) हाथ में जल लेकर प्रार्थना बोलना—गणेश जी को नमस्कार, हनुमान जी को नमस्कार, दुर्गा जी को नमस्कार, कल्कि जी को नमस्कार, गौ–माता को नमस्कार, हे गाय माता मैं आपको यह भोजन दे रही हूँ, स्वीकार करें। हे माँ, मेरी और मेरे परिवार की रक्षा करें। मेरे ऊपर आने वाली विघ्न–बाधाओं को दूर करें, शीघ्रातिशीघ्र मुझे स्वस्थ संतान की प्राप्ति करायें। मैं कल्कि जी का काम करूंगी।

3.पूर्णिमा के दिन सत्यनाराण भगवान की कथा रचना व संकल्प छोड़ना मुझे कल्कि जी का काम करना है।

4.शुभ के पैसों में भैरों बाबा के रोज के 20 रुपये के संकल्प पर हाथ लगाना कि आपका रोट चढ़ाऊंगी।

5.सरस्वती कवच का रोज दो बार पाठ करना।

6.दुर्गा जी का 30 रुपये का संकल्प निकालना कि हे माँ मैं 10–10–6 की पूरी व उन पर हलुआ रखकर आपको चढ़ाऊंगी। पूरी की गड्डियों पर हलुआ रखना होता है। यह पूरी हलवे का प्रसाद घर नहीं लाना होता है। प्रति शुक्रवार पूरी हुलआ बनाकर संकल्प के रुपये रखकर दुर्गा जी के मन्दिर में भेजे देते थे।

7.4–इन–1 पद संग्रह गुरु जी (हनुमान जी/बालमुकुन्द जी) के चरित्र का शनिवार एवम् मंगलवार को पाठ करना।

प्रार्थना—गणेश जी को नमस्कर, हनुमान जी को नमस्कार, दुर्गा जी को नमस्कार, भैरों बाबा को नमस्कार, कल्कि भगवान को नमस्कार, हे कल्कि भगवान मुझे और मेरी आने वाली संतान को सुरक्षा चक्र प्रदान कीजिए। जो कलियुगी, आसुरी, तांत्रिक, अघोरी बुरी शक्तियां मुझे और मेरे बच्चे को परेशान करना चाहती है उससे मुझे बचाएँ। मुझे और मेरे परिवार, मेरे पति और मेरे बच्चे को आसुरी शक्तियों से बचाओ। हमें कल्कि जी का काम करना है।

यह प्रार्थना सब संकल्प के बाद करनी है बस जिन देवी, देवता का संकल्प निकाल रहे हो उनका नाम आखिरी में बोलना होता था।

जिज्ञासु : 011–23973383

आभार प्रभु श्री कल्कि

कु० तनुष बंसल 9818000004

1. हे कल्कि भगवान मैं आपका आभारी हूँ कि आपने श्री हनुमानजी को मेरा गुरु बनवाया।
2. हे श्री कल्कि भगवान मैं आपका बहुत आभारी हूँ कि आप हमारे अंदर समाकर हमसे अच्छा बुलवाते हैं।
3. हे कल्कि भगवान, मैं आपका आभारी हूँ कि आप हमारे अंदर के कलाकार को जगाते हैं।
4. हे कल्कि भगवान मैं आपका बहुत आभारी हूँ कि आप हमारे अनुभवों में जो राक्षस हमें मारना चाहता है उनसे मुझे बचाते हैं।

श्री महावीर चौधरी

स्वप्न महत्वपूर्ण क्यों?
Why are Dreams Important?

लेखिका-श्रेया चौधरी (02672436643) बोस्टन, अमरीका

अनुवाद- श्री महावीर चौधरी (कोलकाता, भारत)

आइंस्टाइन के एक स्वप्न में पूरे जीवन का दर्शन

मशहूर वैज्ञानिक Einstein ने एक स्वप्न देखा कि वो बर्फ के एक पहाड़ से नीचे फिसल रहा है। और फिसलने की गति बढ़ते बढ़ते प्रकाश की गति के समान हो जाती है। उन्होंने कहा कि "मुझे पता था कि इस स्वप्न का अर्थ मुझे समझना होगा, और आप यह कह सकते हैं कि मेरा पूरा वैज्ञानिक जीवन इसी स्वप्न की व्याख्या पर आधारित था।" इस एक स्वप्न ने Einstein के जीवन के पूरे कार्य की भविष्यवाणी की।

स्वप्न एक गुरु की तरह जीवन में मार्गदर्शन करते हैं

मनुष्य के जीवन में स्वप्नों को बहुत महत्व है। इनका उचित विशलेषण मनुष्य के जीवन में घटने वाली दुर्घटनाओं से उसकी रक्षा करता है। साथ ही उसके अन्तर में सोई हुई उसकी शक्तियों के बारे में संकेत देकर जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में उसकी मदद करता है। भूतकाल में समय के द्वारा दिये हुए घावों को ठीक करने का और भविष्य को सुधारने का रास्ता हमें स्वप्न तब तक देते रहते हैं जब तक हम ठीक से समझकर अपनी रोज मर्रा की जिंदगी में उन्हें ढाल नहीं लेते हैं। स्वप्न उस गुरु की तरह है जो अपने शिष्य को तब तक सिखाता रहता है जब तक शिष्य पूर्ण रूप से निपुण नहीं हो जाता है। सपनों का विशलेषण करने से पहले आईये, हम उस स्वप्न-घर के बारे में जाने जहाँ सपनों का जन्म होता है- हमारा मस्तिष्क।

हमारे ज्ञानी ऋषि-मुनियों ने मस्तिष्क को तीन भागों में बाँटा है।

1. **जागृत** (conscious)
2. **अर्ध-जागृत** (preconscious)
3 **सुप्त** (unconscious)

The topography of mind:

The Conscious,Preconsciousand Unconscious

स्वप्न, जागृत व वाणी अनुभव

जगी हुई अवस्था में हर पल हम कुछ सोचते हैं, करते हैं, देखते हैं, बहुत सी घटनाओं से प्रभावित होते हैं। ये सब घटनाएं और विचार मस्तिष्क के **जागृत**(conscious)भाग में संचित होते हैं। इसलिये इस भाग में विचारों का आवगमन अधिक होता है। वर्तमान पल में जिस चीज या विचार पर हमारा ध्यान होता है, वही **जागृत**(conscious) भाग को भर देता है। फिर भी **जागृत**(conscious) भाग पूरे मस्तिष्क का आठ-दस प्रतिशत ही होता है।

हमारे चाहने पर और भी बहुत सी सूचनाएं हमारे **जागृत**(conscious) भाग को प्राप्त होती हैं। जैसे रात को हमने क्या खाया, एक हफ़्ते पहले हम किससे मिले, एक महीने पहले हम कहाँ घूमने गए थे, एक साल पहले हम किस दोस्त की शादी में गए थे इत्यादि। ये सब सूचनाएं हमारे **अर्ध-जागृत**(preconscious) भाग में संचित रहती हैं जिससे परिस्थिति अनुसार हमारे चाहने पर वह हमारे जागृत(conscious) भाग को भेजता है।

श्रेया चौधरी, बोस्टन, अमेरिका

अधिकांश लोगों के लिये मस्तिष्क **जागृत**(conscious) और **अर्ध जागृत**(preconscious) इन्हीं दो भागों में बँटा हुआ है। पर जैसा कि सामने चित्र में दिखाया गया है, जागृत और अर्ध जागृत पूरे मस्तिष्क रूपी पर्वत की केवल एक चोटी के समान है। मस्तिष्क का वो विशेष हिस्सा जिसमें हमारी असली पहचान, शक्तियाँ और ज्ञान छिपा हुआ है, **सुप्त**(unconscious) कहलाता है।

अर्ध-जागृत(preconscious) और सुप्त(unconscious) कभी भी नहीं सोते हैं।

मस्तिष्क का **जागृत**(conscious) भाग अपने **सुप्त**(unconscious) भाग से जुड़ा हुआ नहीं होता है। **सुप्त**(unconscious) भाग की शक्ति असीमित है। इसमें ज्ञान का अनन्त भंडार छिपा हुआ है। मनुष्य का पूर्ण व्यक्तित्व (उसकी इच्छाएं, लक्ष्य, घृणा, प्रेम, भय इत्यादि) इसी भाग से संचालित होता है। **सुप्त**(unconscious) भाग ही हर पल इस ब्रह्माण्ड से, हमारे वर्तमान वातावरण से आने वाले सभी positive और negative संकेतों को ग्रहण कर हमारे व्यक्तित्व का निर्धारण करता है। कौन हमारा मित्र होगा, कौन शत्रु, हम किससे प्रेम करेंगे किससे घृणा यह सब हमारा **सुप्त**(unconscious) भाग ही निर्धारित करता है। **हम सोचते हैं कि हमने चुना, हमने फैंसला किया परन्तु इन चुनावों और फैसलों का असली कारण सुप्त(unconscious) की गहराइयों में स्थित हमारे असली व्यक्तित्व की आकाँक्षाओं और भय में छुपा होता है।** सही असली कारण हमारे पहुँच और नियंत्रण के बाहर होता है हालांकि हमारा **जागृत**(conscious) मस्तिष्क हमारे चुनावों की सफाई देने और लीपापोती करने का काम कर लेता है।

मनुष्य के मस्तिष्क को मुख्यता तीन प्रमुख प्रवृत्तियाँ संचालित करती हैं।

1. **लालसा**
2. **संस्कार-ज्ञान-मर्यादा** (super ego)
3. **विवेक-धैर्य** (ego)

The structure of mind: Ego and Superego

अगर **जागृत**(conscious),**अर्ध जागृत**(preconscious) और **सुप्त**(unconscious) भाग मस्तिष्क का मैदान है तो **लालसा** , **संस्कार-ज्ञान** (super ego) और **विवेक-धैर्य**(ego) उस मैदान में खेलने वाले तीन अलग-अलग खिलाड़ी हैं। ये तीनों खिलाड़ी रूपी प्रवृत्तियाँ अक्सर एक दूसरे के विपरीत आचरण करती हैं।

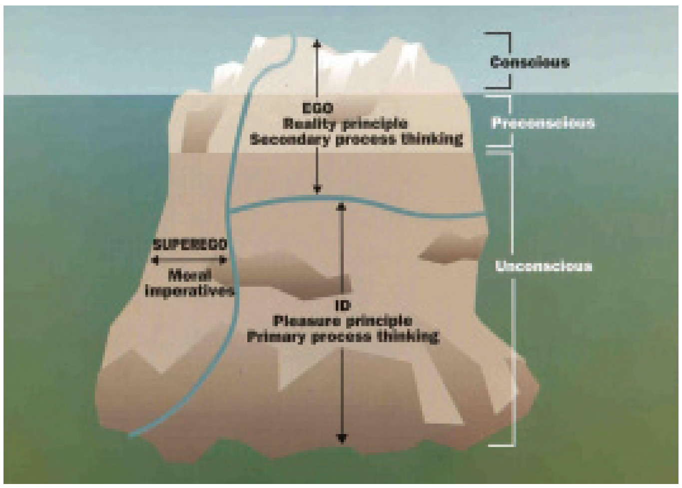

मनुष्य की लालसा आनंद प्राप्ति के सिद्धांत पर कार्य करती है

लालसा आनंद प्राप्ति के सिद्धांत पर कार्य करती है। जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, मनुष्य के **सुप्त**(unconscious) के 2/3 भाग को उसी **लालसा** और कई जन्मों की अतृप्त इच्छाएं संचालित करती है जो उसे हर पल संसार के सभी सुख और ऐशो-आराम किसी भी कीमत पर प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती रहती हैं। मस्तिष्क के उसी हिस्से में मनुष्य का असली व्यक्तित्व भी निवास करता है जो यह निर्धारित करता है कि भविष्य में उसे क्या बनना है, क्या लक्ष्य हांसिल करना है इत्यादि।

यह **लालसा** ही परिस्थिति विशेष में मनुष्य की सोचों को आकार देकर उसकी कार्य पद्धति का निर्धारण करती हैं, हालांकि **लालसा** की अनगिनत इच्छाओं को अक्सर **संस्कार-ज्ञान**(super ego) नियंत्रित करता है। **संस्कार-ज्ञान**(super ego) नैतिकता के सिद्धांत पर कार्य करता है और मनुष्य के वंशानुगत (जिस कुल में उसने जन्म लिया) संस्कार और सामाजिक तौर तरीके को दर्शाता है। किसी भी परिस्थिति विशेष में सामाजिक और नैतिक रूप से मनुष्य से क्या अपेक्षित है, **संस्कार-ज्ञान**(super ego) उसका निर्धारण करता है।

मस्तिष्क की तीसरी प्रवृत्ति **विवेक-धैर्य**(ego) है जो मनुष्य की **लालसा** और **संस्कार-ज्ञान**(super ego) के बीच बिचौलिये का कार्य करते हैं। **विवेक-धैर्य**(ego) पूर्ण व्यवहारिक सिद्धांत पर कार्य करता है और उसका प्रमुख कार्य **लालसा**(Id) की इच्छाओं की पूर्ति करना है। **विवेक-धैर्य**(ego)मनुष्य की **लालसा** को **संस्कार-ज्ञान**(super ego) की मर्यादा के तराज़ू में तोल कर, सदैव इस रूप से संतुलित करने की चेष्टा करता है जो सामाजिक रूप से मान्य हो।

हम एक उदाहरण के द्वारा इन प्रवृत्तियों को समझाने का प्रयत्न करते हैं। हमारे सामने थाली में सजी हुई बहुत ही स्वादिष्ट मिठाइयाँ, व्यंजन आते हैं। हमारी **लालसा** तुरन्त कहती है कि सारी मिठाइयों और व्यंजनों को तुरन्त खा जाओ। हमारा **संस्कार-ज्ञान**(super ego) तब हमें तुरन्त सावधान करता है कि ऐसा मत करना, मिठाइयों में बहुत फैट होता है, तुम अदनान सामी बन जाओगे। तब हमारा विवेक-धैर्य(ego)दोनों के बीच में बिचौलिये का कार्य कर सुझाव देता है कि वास्तव में मिठाइयाँ बहुत स्वादिष्ट है पर हम ऐसा करते हैं कि केवल एक टुकड़ा खा लेते हैं जिससे हमारी तृप्ति भी हो जायेगी और हम अदनान सामी भी नहीं बनेंगे।

चूंकि **लालसा** और अतृप्त इच्छाएं हमेशा घोर आतुरता को जन्म देती है **विवेक-धैर्य**(ego) के पास इनसे लड़ने के अनेक हथियार होते हैं जिन्हें हम सुरक्षा तंत्र कहते हैं। यह **सुरक्षा तंत्र**(defense mechanism) इन अधिकांश अवांछनीय विचारों को हमारे **जागृत** (conscious)भाग तक पहुँचने भी नहीं देते हैं ताकि हम अपनी प्रतिदिन की दिनचर्या के सारे काम कम से कम अशांति के साथ कर सकें।

जब मस्तिष्क के **सुप्त**(unconscious) भाग में हमारे व्यक्तित्व के निर्माण और पहचान में सहायक सभी महत्वपूर्ण सूचनाएं **लालसा** के रूप में रहती है, और यदि हमारे **विवेक-धैर्य**(ego) द्वारा निर्मित **सुरक्षा तंत्र**(defense mechanism) उन सूचनाओं को(by default) हमारे **जागृत**(conscious) भाग तक पहुँचने ही नहीं देता, तो सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह आता है कि उन सूचनाओं को हम कैसे पा सकते हैं? उत्तर- हमारे स्वप्न!!!

Dreams and Unconcious

हमारे ज्ञानी ऋषि-मुनियों ने कहा है "स्वप्न शाही मार्ग हैं **सुप्त**(unconscious) तक पहुँचने का"। स्वप्न हमारे मस्तिष्क के **सुप्त** (unconscious) भाग से हमारे अर्ध जागृत (preconscious)भाग को भेजे हुए वो संकेत हैं जो हमारी भलाई के लिये उत्पन्न होते हैं। स्वप्न हमारे मस्तिष्क के **सुप्त** (unconscious) में छुपी सूचनाओं को हमारे **अर्ध जागृत**(preconscious) भाग तक पहुँचात हैं जब हमारा **जागृत**(conscious) भाग सो रहा होता है। स्वप्न देखने के समय हमारा **विवेक-धैर्य**(ego) **सुप्त**(unconscious) भाग

से आ कर अशांति उत्पन्न करने वाले सभी विचारों को अपने सुरक्षा तंत्र के द्वारा विभिन्न प्रतीको/चिन्हों में बदल देता है ताकि उनकी प्रहारक क्षमता कम हो जाए।

इसलिये हमारे स्वप्नों के अर्थ अस्पष्ट और छड़ावेशी होते हैं। स्वप्न दिखने में मूर्खतापूर्ण भ्रम उत्पन्न करने वाले या अटपटे हो सकते हैं पर वे झूठ नहीं बोलते। इनके सही विश्लेषण से हमारी नीचे लिखी सभी समस्याओं का स्पष्ट समाधान होता है।

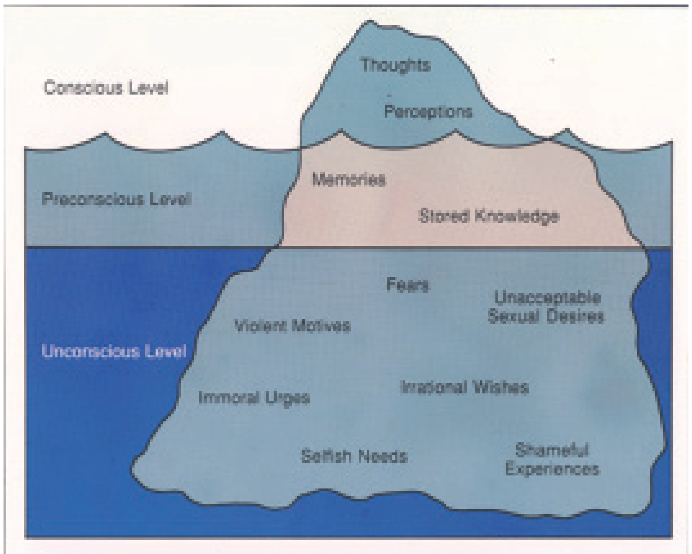

हमारी सुप्त भाग की अनंत ऊर्जा जागृत होकर प्रतिदिन स्वप्नों के माध्यम से हमारा मार्ग दर्शन करने लगती है

1. हमारे जीवन की प्रतिदिन की समस्याएं
2. हमारे जीवन के अनसुलझे संघर्ष जो हमें मानसिक रूप से परेशान करते रहते हैं
3. भविष्य में हम क्या हांसिल कर सकते हैं।
4. हमारी अतृप्त इच्छाएं जिन्हें हम दबा देते हैं, या हमारा भय जिसका सामना हम नहीं करना चाहते जब हम सही विश्लेषण करके स्वप्नों का सही अर्थ जान लेते हैं तो हम अपने आप के एक सही हिस्से को जानने लगते हैं। अपने आप को जानना हमारे आगे बढ़ने के मार्ग को प्रशस्त करता है। यह एक ऐसा दिव्य उपहार है जो हर समय हमें देता रहेगा। हम अपने स्वप्नों पर जितना अधिक ध्यान देंगे हमारे स्वप्न भी हमारा उतना अधिक ध्यान रखेंगे। परिस्थिति विशेष में हमारे **सुप्त**(unconscious) भाग की अनंत ऊर्जा जागृत होकर प्रतिदिन स्वप्नों के माध्यम से हमारा मार्ग दर्शन करने लगती है।

Dreams and Lord Shree Kalki

जैसा ऊपर स्पष्ट किया गया है कि **सुप्त**(unconscious) भाग की ऊर्जा और शक्ति अनंत है पर यह सोई हुई और **जागृत**(conscious) भाग से गुप्त अवस्था में रहती है। मस्तिष्क के **सुप्त**(unconscious) भाग की गहराईयों में एक विशिष्ट हिस्सा होता है जिससे हम **ईश्वरीय सुप्त**(collective unconscious) कर सकते हैं। यह ईश्वरीय सुप्त हमें ईश्वर से और हमारे पूर्वजों से विरासत में प्राप्त होता है। इस हिस्से में सभी आम मानवीय प्रवृत्तियाँ जैसे माँ के लिये प्यार, अँधेरे से डर, ईश्वर के लिये भक्ति इत्यादि और हमारे कई जन्मों के पाप-पुण्यों का हिसाब रहता है। इसी हिस्से में हमारे करोड़ों देवी-देवताओं का भी वास होता है। हमारे जीवन में जितनी भी परिस्थितियाँ हो सकती हैं उतने ही देवी देवता हमारी सहायता के लिऐ इस ईश्वरीय सुप्त में उपलब्ध रहते हैं। लाखों वर्षो से हमारे ऋषि-मुनियों ने जप, तप, साधना और मन्त्रों के हवन इत्यादि के द्वारा गहन शोधन करके ईश्वरीय सुप्त की शक्ति को जागृत करने और इसमें छुपी सभी सूचनाओं को प्राप्त करने की विद्या का विकसित किया है। उनकी भाषा में इससे कुंडिलिनी जागरण कहते हैं जिसके पश्चात् यह असीमित ऊर्जा एक व्यवस्थित रूप में साधक को **सुप्त**(unconscious) में छुपे सारे संकेतों के ज्ञान का अनंत भंडार प्रदान करती है। उसका दैवीय जगत से साक्षात्कार होने लगता है और उसे अपना लक्ष्य तथा सुख-शांति प्रदान करने वाले सभी कार्य स्पष्ट दिखाई पड़ने लगते हैं।

आज की इस भागदौड़ वाली जिन्दगी में किसी के पास इतना समय नहीं है कि इतनी साधना, जप, तप और हवन इत्यादि करके सुप्त मस्तिष्क की इस असीम शक्ति को जागृत करने का असम्भव कार्य को सम्भव कर सके। परन्तु इस असम्भव कार्य को भगवान विष्णु के दसवें महाअवतार भगवान श्री कल्कि ने संभव कर दिखाया है। अपने महामंत्र 'जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते' और जय श्री कल्कि, जय माता दी' में उन्होंने ऐसी अद्‌भुत शक्ति का संचय कर दिया है कि जब उनके भक्त उनके नाम का संकल्प करके आँख बंद करके इन मंत्रों की एक माला का जाप करते हैं (जिसमे केवल 5-7 मिनट लगते हैं), इन मंत्रों में निहित उस अद्‌भुत और असीम शक्ति की सूक्ष्म तरंगे उसके जागृत और अर्ध जागृत मस्तिष्क के सभी व्यवधानों को चीर के उसके सुप्त मस्तिष्क की सोई हुई शक्ति पर प्रहार करके उसे जागृत करने का कार्य करने लगती हैं। फल स्वरूप कुछ ही दिनों में बिना कुण्डलिनी जागरण के भक्तों को स्वप्नों के माध्यम और उनके सही विश्लेक्षण से अपने वर्तमान व्यक्तित्व की स्थिति, अपने अंदर में छुपी हुई अच्छाइयों, बुराइयों, पाप-पुण्यों के भुगतान और भविष्य में घटने वाली घटनाओं का आभास होने लगता है।

Dreams, Kalki and the Purpose of Life

हम कौन हैं? हम यहाँ क्यों हैं? हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है? ये गंभीर प्रश्न मानव जाति को सैंकड़ों वर्षों से उलझन और जिज्ञासा में घेरे हुए हैं। इन प्रश्नों का कोई एक सही जवाब नहीं क्योंकि हमारे कल्कि ने हम सब को कोई एक विशिष्ट कार्य के लिये चुना है। हमे सच्चे सुख-शांति की प्राप्ति तभी होगी जब उस विशिष्ट कार्य को हम अपने जीवन का लक्ष्य बनायें। भगवान श्री कल्कि की स्वप्नलीला और उन स्वप्नों के उचित विश्लेक्षण द्वारा भक्त संकटों और बाधाओं से अपनी रक्षा कर, अपने जीवन के लक्ष्य की ओर बढ़ने लगता है। इस एहसास के साथ ही भक्त जीवन मंगलमय बनाते हुए यह खुशी संसार में भी बाटें।

जब अपोलो हास्पिटिल ने कहा दिमाग के ऑपरेशन की जरूरत नहीं कल्कि जी के उपचार हैं या चमत्कार

–आपबीती सुश्री सीमा गुप्त (9899990463)

—संकलनकर्ता : मेघना गोयल (9136377829)

मेरे पास 20 अगस्त की शाम को दिल्ली पीतमपुरा से सुश्री सीमा गुप्त का फोन आया कि उनकी मम्मी हिसार में रहती हैं उनकी हालत खराब होने पर दिल्ली के गुड़गाँव में स्थित मेदांता अस्पताल में लाया गया है जहाँ उनकी एम.आर.आइ हुई है उनके दिमाग की नस फूली हुई है उनके दिमाग का ऑपरेशन बोल दिया है। अब हम क्या करें? इस पर मैंने सीमा से पूछा कि क्या आपकी मम्मी कल्कि जी को मानती हैं? मुझे सीमा ने बताया हाँ मम्मी को तो बैंक लॉकर की चाबी कल्कि जी के उपचार से मिली थी, और उनकी आपबीती कल्कि जी की मासिक पत्रिका में भी छपी थी। तब से तो वो कल्कि जी की माला करती हैं। चूंकि मैं अपने किसी रिश्तेदार की मुर्दनी (मृत्यु) में आई हुई थी मैंने उन्हें अगस्त की मासिक पत्रिका में छपी आपबीती **एक सप्ताह, पाँच डाक्टर, 7 उपचार 100 प्रतिशत समस्या का समाधान** यह whatsapp पर भेज दी कि आप यह पढ़ कर यह सातों उपचार फौरन कर दीजिए।

1. 129 रुपए–हनुमान जी योगी–योगिनी 2. 20 रुपए और 14 परांठे दुर्गा जी 3. 20 रुपए और 5 परांठे हल्दी के माँ बगुलामुखी के 4. 20 रुपए योगमाया जी 5. 70 रुपए भैंरो जी की दवाई (शराब) वाले उपचार के
6. पौनी कटोरी चीनी एक सिक्का हाथ लगाकर धनवंतरी वैद्य जी के पाँच हवन के संकल्प करने को कहा। **मंत्र—हक् अनीह निष्कलंक गौरण्डा दुष्टहा नाशनं पापहा** उपचारों की प्रार्थना स्वप्नानुभव एक संपदा पुस्तक के पृष्ठ 205 से 219 में से देख कर कर दें।

इसके बाद मेरी उनसे कोई बात नहीं हुई। 23 जुलाई की सुबह सुश्री सीमा का फोन आया और उसने मुझे बताया कि कल्कि जी के यह उपचार नहीं साक्षात् चमत्कार हैं। 20 जुलाई की शाम को ही सीमा के भैया भाभी जो हिसार में रहते हैं उनके पूरे परिवार ने सभी के संकल्प लिए और तभी मंदिर में जाकर उपचार भी कर आए। इधर उपचार हुए हैं और उधर दिल्ली में सीमा की मम्मी को मेदांता, हिसार से अपोलो अस्पताल, नई दिल्ली लेकर गए के डॉक्टरों ने चैलेंज करते हुए कहा कि आपकी मम्मी को ब्रेन से संबंधित समस्या है ही नहीं। आपरेशन तो बहुत दूर की बात है बल्कि उन्होंने (सीमा की माताजी की) पहले से चल रही मिर्गी की दवाइयाँ भी बंद करवा दीं। यह आपबीती लिखने तक सीमा की माताजी

लेकिन यह सातों उपचार मौसा जी को क्यों नहीं बचा पाए......

यही सात उपचार एक कल्कि भक्ता (श्री राहुल की पत्नी सुश्री मोना अग्रवाल)के मौसा जी का ब्रेन हैमरेज होने पर जब किए गए तो इनसे वह बच नहीं पाए। क्योंकि न तो वह कल्कि जी को जानते थे और ना ही मानते थे।

इसका कारण जब हमने मामाजी से पूछा तो उन्होंनें बताया कि देखो बैंक से लोन उसे ही मिलता है जिसका खाता पहले से वहाँ हो। क्योंकि उस कल्कि भक्त के मौसा जी कल्कि नाम में नहीं थे अत: उन्हें यह उपचार असर नहीं कर पाए एवम् कल्कि जी के प्रोजेक्ट में संलग्न होना भी विशेष फलदायी होता है।

कफन की तैयारी कर ले

— सुश्री रचना गर्ग (9990485395)

19 जुलाई 2014 को मुझे वाणी अनुभव हुआ —

स्वप्नानुभव:– अपने बेटे के कफन की तैयारी कर ले। मेरे तो मानो होश उड़ गए।

अर्थ-उपचार:– मैं एकदम उठ खड़ी हुई। और मैंने समय की परवाह न करते हुए अपने मंदिर में जोत जगाई और यमुना जी का 5 के सिक्के से और काली जी का 20 रुपए से उपचारों का संकल्प लिया। इस मंत्र की माला की

दाहिने मेरे बेटे की भवानी विराजें, सम्मुख श्री गणेश, पंच देव रक्षा करें, ब्रह्मा, विष्णु महेश

शाम साढ़े सात बजे मैं मंदिर गई और मैंने यह उपचार कर दिए। 5 रुपए यमुना जी के कृष्ण जी के चरणों में चढ़ा दिए। 15 रुपए की सफेद बरफी 5 रुपए दक्षिणा के साथ काली जी को चढ़ा कर प्रार्थना पुन: कर दी। वाणी अनुभव के बाद जो बैचेनी थी वह दूर हो गई । इससे मुझे बहुत हल्का महसूस हाने लगा मानो कोई बहुत बड़ा संकट टल गया।

19 जुलाई 2014 की ही रात को 9 बजे मेरा बेटा दुकान से आया तो मैंने उससे पूछा तू ठीक तो है रे? उसने मुझे बताया कि मम्मी आज मेरा एक्सीडेंट कार से हुआ मेरी स्कूटी कार से जाकर टकराई। मैं आज मरने से बच गया लेकिन कमाल है मम्मी मेरी स्कूटी को और मुझे कोई चोट नहीं आई। मैं तो यह सुनकर भगवान श्री कल्कि की ऋणी हो गई। मैंने अपने बेटे को जब सारा अनुभव और उपचार वाली बात बताई तो वह भी हैरान रह गया। अगले दिन हमने भगवान श्री कल्कि का व यमुना महारानी जी और काली जी का धन्यवाद किया।

प्रचार चाहिए-प्रचार चाहिए-कल्कि जी को प्रगट होने के लिए प्रचार चाहिए

आओ बताएं आज तुम्हें 5 वर्षों में (2009 से 2014)

श्री कल्कि जी एवं

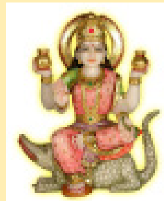

स्वप्नमयी गंगा महारानी ने

7 नवंबर 2009 से 7 जुलाई 2014 तक भगवान श्री कल्कि की 60 मूर्तियाँ की स्थापना

माँ ललिता मंदिर, नैमिषारण्य तीर्थ सीतापुर 19 फरवरी 2010

भगवान श्री कल्कि का साहित्य देखकर और तथ्य समझकर भारत सरकार ने भी सत्युग में स्थापित नैमिषारण्य तीर्थ के माँ ललिता मंदिर में कल्कि जी की मूर्ति लगाने की इजाजत दी

An application has been received from Shri Kalki Bal Vatika through Pradhan Sri Om Prakash Gupta, V-2, Bahadur Apartment, 9, Raj Narain Road, Civil Line, Delhi-54, for seeking permission to install temple of Lord Kalki. It is averred that in several parts of India in different places, temple of Lord Kalki have been installed. The oldest one is of year 300-400 years. This process is repeatedly increasing in recent times. Installation of temple of Lord Kalki in the compound of ~~reknown~~ Maa Lalita Devi in Naimisharanya will inevitably be in the interest of Deity, as it will augment the income and will add to the improvement of the temple of Maa Lalita Devi. Further the probability/chances of illegal encroachment by the intruders would be avoided, as reported by the Manager of temple of Maa Lalita Devi.

After considering the entire facts and circumstances and the interest of Deity, I hereby accord permission to construct temple of Lord Kalki in the verandah situated towards left of the eastern gate of the temple in front of Hawan Kund. After the temple is constructed and Deity is vivified, the whole of the temple of Lord Kalki shall vest in Maa Lalita Devi and all the offerings, gifts, income, donations etc. of every kind shall be the part and parcel of the temple of Maa Lalita Devi.

Inform all concerned.

(N.L.Agrawal)
District Judge,
Sitapur.
25.11.2009.

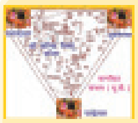

रामावतार में अगस्तय मुनि द्वारा प्रणीत श्री कल्कि सहस्त्रनामावली संस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित व स्कन्द पुराण भूमि वाराह खण्ड से युगावतार भगवान श्री कल्कि की जन्मस्थली सम्भल का सम्भल माहात्म्य जहाँ सत्युग में विश्वकर्मा ने 68 तीर्थ 19 कूप बनाए

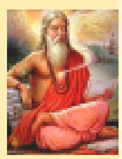

* महर्षि वेदव्यास जी द्वारा रचित 18 पुराणों में चार लाख श्लोक हैं जिसमें स्कन्द पुराण में 81 हजार श्लोक हैं जिसके भूमि वाराह खण्ड में कलियुग में भगवान श्री कल्कि की जन्मस्थली सम्भल और उसके तीर्थ, कूपों का पूर्ण माहात्म्य उपलब्ध है

ठाकुर की नगरी कोलकाता से प्रकाशित

श्री वरूण चौधरी-9831089302 सुश्री रश्मि गनेरीवाल-9831273015 सुश्री इंदू बंसल-9818416191

दानघाटी मंदिर, गिरिराज जी गोवर्धन (यू.पी.) 19 नवंबर 2011

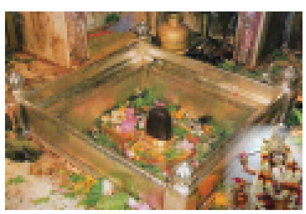

कांशी विश्वनाथ,मंदिर के परिसर (अक्षय वटवृक्ष) में वाराणसी, यू.पी. 8 मार्च 2014

श्री गौरी शंकर मंदिर, चांदनी चौक दिल्ली 9 नवंबर 2009

बैद्यनाथ धाम, वी.आई.पी. स्थल, देवघर 19 जनवरी 2014

श्री अग्रोहा धाम, हिसार, हरियाणा महाराजा अग्रसेन के बराबर 17 जुलाई 2014

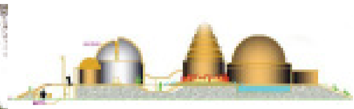

अग्रोहा धाम में निर्माणाधीन कल्कि म्यूजियम

श्री हनुमान मंदिर, कनॉट प्लेस दिल्ली-19 जून 2011

श्री हनुमान मंदिर, किरोड़ीमल कॉलेज परिसर छात्रा मार्ग, दिल्ली-19 जून 2011

प्रचार चाहिए-प्रचार चाहिए-कल्कि जी को प्रगट होने के लिए प्रचार चाहिए

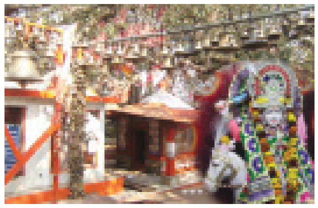

माँ विंध्यवासिनी, विंध्याचल
मिर्जापुर, 13 मई 2013

गोलू देव महाराज मंदिर, घोड़ा खाल
भुवाली,
14 जनवरी 2014

माँ शीतला मंदिर, दशाश्वमेध
घाट, वाराणसी, 12 मई 2013

दुर्गा कुण्ड, माँ कूष्मांडा परिसर
कांशी वाराणसी
19 अक्टूबर 2012

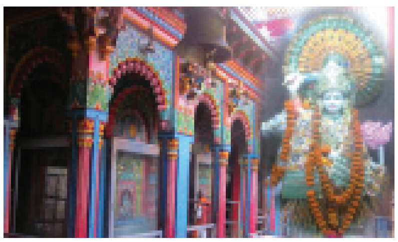

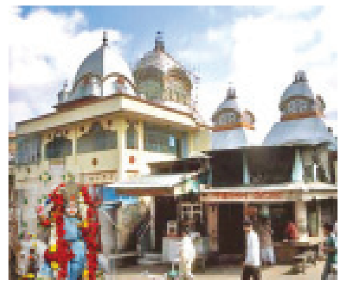

नागेश्वर महादेव मंदिर,
अयोध्या (यू.पी.)
26 अप्रैल 2014

ईस्कॉन मंदिर, ईस्ट ऑफ
कैलाश, दिल्ली
दूसरी मंजिल, वैदिक एक्सपो में

काली घाट मंदिर, कोलकाता
7 मार्च 2011

गीता आश्रम, चोटी वाले के सामने
स्वर्गाश्रम रोड, ऋषिकेश
29 जून 2014

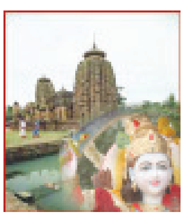
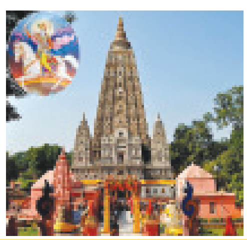
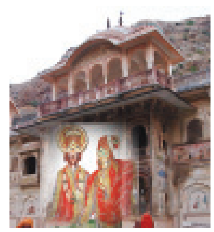

मुक्तेश्वर, नैनीताल
29 अप्रैल 2013

विष्णु पाद मंदिर
गया जी, बिहार
1 अक्टूबर 2009

श्री कल्कि जी महाराज मंदिर
हवा महल, जयपुर, 400 वर्ष पूर्व

श्री कल्कि विष्णु मंदिर
पूर्वी कोर्ट, सम्भल
300 वर्ष पूर्व

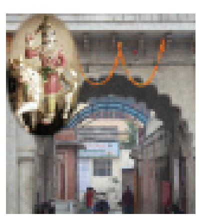
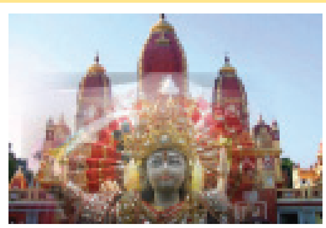
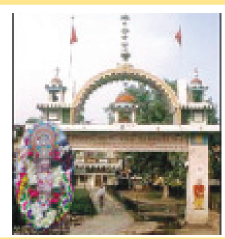

अमृत परिसर, शिव गंगा पुरम
ब्रजघाट, गढ़गंगा
15 जुलाई 2007

माँ योगमाया मंदिर, महरौली
कुतुब मीनार, दिल्ली
1997

कालका जी मंदिर, नेहरू प्लेस
दिल्ली 19 जनवरी 2004

दूधिया भैंरों मंदिर, पुराना किला
दिल्ली 1997

संपर्क–श्री कल्कि बाल वाटिका (कैन-कैन) 1903, पहली मंजिल, चांदनी चौक, दिल्ली-6

9136377829, 9818416191, 9873349478 visit our website : www.kalkiji.org

कृप्या पृष्ठ पलटें

प्रचार चाहिए-प्रचार चाहिए-कल्कि जी को प्रगट होने के लिए प्रचार चाहिए

श्री कल्कि भगवान की संगमरमर की मूर्ति बनवाने का सफर कल्कि जी जयपुर में ऐसे शुरू करवाते हैं

मार्वल खरीदकर ट्रैक्टर में लाद कर क्रेन द्वारा कटिंग मशीन पर लाया जाता है

मार्वल शिला कारीगरों के पास मूर्ति बनने के लिए पहुंचती है वहाँ से भारी मूर्तियों को गंतव्य स्थलों तक क्रेन से पहुंचाया जाता हे

पिंजरपोल गऊशाला किशनगंज नई दिल्ली एवं मयूर विहार फेज-1 गऊशालाओं में कल्कि जी विराज रहे हैं

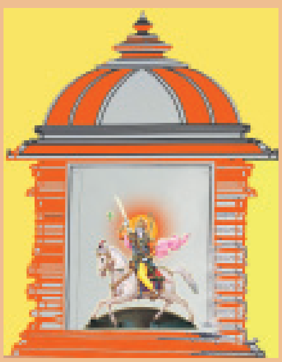

* प्रसन्ना जो दूध पीकर नाचती है
* गंगा जो शिव परिवार की पूजा के बिना भोजन ग्रहण नहीं
* श्रीकृष्ण को प्रिय कपिला गाय
* श्रीराम को प्रिय मृगलोचनी गाय

क्या आप भी राजा रानी बनना चाहते हैं?

तो आएं अन्य राजा रानियों की तरह आप भी ऐसे चमत्कारी महाविष्णु भगवान श्री कल्कि की मूर्ति लगाने का विचार बनाइए और पाइए अन्य राजा रानियों की तरह अपने जीवन में भी आए प्रतिदिन बदलाव।

बच्चों तुम ही नहीं भारत सरकार भी भगवान श्री कल्कि का प्रचार कर रही है

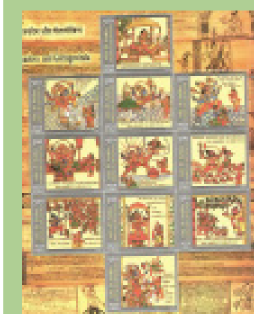

दशावतार डाक टिकटों की श्रृंखला

दशावतार कलैंडर

भगवान श्री कल्कि का रक्षा कवच

जैसे रक्षा बंधन के दिन घर के बाहर कल्कि नाम या राम नाम लिखकर सोन लगाते हैं वैसे ही यह रक्षा कवच लैमिनेशन करवाकर अपने घर के बाहर लगवा सकते हैं।

मेरी फंसी ज्वैलरी निकली-ससुर की निकल कर फंसी

—सुश्री निधि गुप्ता (9818416191)

शादी के बाद से ही मेरी सहेली (जो कल्कि जी को मानने वाली है) की ज्वैलरी परिवार के बड़े सदस्यों के साथ रहती है। मेरी सहेली के ससुर व्यापार में पैसे की कमी को दूर करने के लिए अक्सर अपना और कभी उसका सामान गिरवी रख देते थे। कभी-कभी दोनों का सामान भी एक साथ रख देते थे। फलस्वरूप वह विभिन्न ब्याजों व कर्जों के चक्रव्यूह में फंसते चले गए।

अबकी बार तो दोनों की ही ज्वैलरी ऐसी फंसी कि निकलने का नाम ही नहीं ले रही थी। ब्याह शादी में भी जाना होता था तो बड़ी पेरशानी होती थी। इसके लिए उसने मेरे से इसका दो तीन बार जिक्र किया। मैंने उसे मामाजी का फोन नं. दे दिया।

उसने मामाजी से बात की, इस पर मामाजी ने कहा कि देख बहन तेरी सारी ज्वैलरी वापिस तो आ जाएगी अगर तू कल्कि जी का 5 प्रतिशत का शेयर बोले। एक बात का ध्यान रखना कि कल्कि जी को उधार पसंद नहीं है। ज्वैलरी आने पर उनके प्रोजेक्ट के लिए कैश देना होगा और अगर कैश नहीं हो तो **ज्वैलरी का टुकड़ा*** (प्रमाण के तौर पर लगी सैम्पल की रसीद) दे देना। पहले चार पांच दिन सोच ले तब संकल्प करना।

उसने मामाजी के कहे अनुसार मानसिक संकल्प किया और आश्चर्य है कि देखते ही देखते चार पांच महीने में उसका सामान वापिस आ गया। उसने संकल्प के अनुसार भगवान का शेयर श्री कल्कि बाल वाटिका के पास कल्कि जी के प्रोजेक्टस में लगाने को भेज दिया।

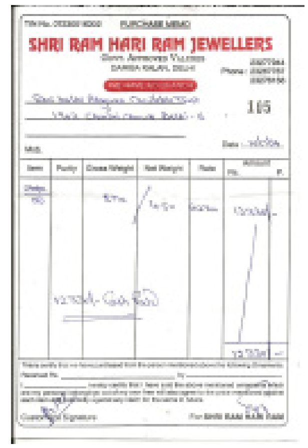
PURCHASE MEMO
SHRI RAM HARI RAM JEWELLERS
105

* भगवान के 5 प्रतिशत शेयर की रसीद की एक प्रति

कमाल है उसके ससुर का भी लगभग उससे भी ज्यादा कीमत का फंसा सामान वापिस आ गया। लेकिन उन्होंने 5 प्रतिशत शेयर यह कहकर सत्यनारायण व्रत कथा की तरह कह कर टाल दिया कि मैं देने को मना थोड़ी ही कर रहा हूँ? जब यह माल बिकेगा तब 5 प्रतिशत दे दूँगा। उन्होंने वह सामान को कारीगर के पास ठीक होने दे दिया। कल्कि जी की लीला कल्कि जी जानें। कारीगर को उन्होंने ठीक कराई का पैसा नहीं पहुंचाया और कारीगर ने उन्हें माल दिया नहीं। दूसरे शब्दों में उनकी ज्वैलरी निकल कर भी दुबारा फंसी पड़ी है।

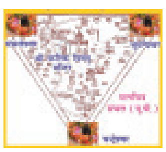

सम्भल सहस्त्रनाम हवन के संकल्प से वर्षों पुरानी ज्वैलरी मिली

—सुश्री सरिता गुप्ता (9136377829)

मैं श्री कल्कि मासिक पत्रिका पढ़ रही थी जिसमें मुझे सम्भल में कल्कि सहस्त्रनाम के अप्रतिम प्रभाव पढ़कर मेरा मन भी चीत्कार कर उठा कि तेरी शादी की ज्वैलरी भी तो सालों से अपनों में फंसी पड़ी है। जब जब भी किसी उत्सव (दिवाली, ब्याह, शादी, पार्टियों में) पर मैं पहनने को तक को मांगती तो ऐसा जवाब मिलता जिसे कोई भी सभ्य सात्विक नारी बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। देखते देखते मेरी बेटी की शादी का दिन नजदीक आ गया। मुझे कोई रास्ता नहीं सूझता था।

जाने मेरे कौन से जन्म के पुण्य थे जो मेरी आत्मा से आवाज आई कि क्यों न मैं भी चमत्कारी श्री कल्कि का चमत्कार तो देखूँ। मैं तुरंत उठी और मैंने ज्योत जगाकर गंगा जी होते हुए संभल में श्री कल्कि सहस्त्रनाम के दो कुण्डीय यज्ञ में पाँच बार जाने का संकल्प लिया। " हे श्री कल्कि भगवान मैंने बहुत सुना है कि आप तो चमत्कारी हैं, मेरी पच्चीस सालों से रूकी ज्वैलरी बिना किसी क्लेश के मुझे दिलवाएं तो मैं भी देखूँ कि आप कितने चमत्कारी है।

प्यारे बच्चों, कमाल है मेरे पाँच संकल्प गंगा जी-संभल सहस्त्रनाम यज्ञ के लेते ही तीसरे दिन दैवीय शक्तियों ने आसुरी शक्तियों का ऐसा गला दबाया कि मेरी ज्वैलरी भगवान श्री कल्कि ने इतनी इज्जत से मुझे दिलवाई कि आज भी जब मुझे याद आता है तो मेरा रोम रोम रोमांचित हो जाता है।

यहाँ एक बात अवश्य कहना चाहती हूँ कि वर्षों बाद मिली ज्वैलरी की खुशी में मैं कल्कि पैनल की पूरी मदद नहीं ले पाई कि मुझे कल्कि भगवान ने जो ज्वैलरी दिलवाई उसमें उनका कितना शेयर निकालना है? मुझे अपनी गल्ती का अहसास तब हुआ जब मैंने मामाजी द्वारा बताई सुश्री रश्मि गुप्त की आपबीती सुनी (9873345859)। जो महातांडव आसुरी शक्तियाँ मेरे यहाँ उसे झपटने के लिए करा रही थीं।

कल्कि पैनल के कहने पर ज्वैलरी मैंने मिलने के उसी दिन सुनार के पास बेटी के नए गहने बनने भेज दी वरना दोबारा वह वहीं खजाने में जाकर जमा हो जातीं जहाँ से आई थी। क्योंकि यह मेरी मरी हुई ज्वैलरी मुझे मिली है सो कल्कि पैनल ने मुझे पांच प्रतिशत भगवान श्री कल्कि का शेयर निकालने के लिए कहा जो मैंने निकाला।

मानना पड़ेगा क्योंकि तेरी नियति में यही है

ब्रह्माण्ड अंधा है/कल्कि जी अनुभव (चार प्रकार के) देने के बाद कलियुग के आगे मजबूर हैं भाग-3

— मेघना गोयल (9136377829)

अगस्त 2013 में भगवान श्री कल्कि के पीले लीफलैट और मासिक पत्रिका का कार्य जिस रात पूरा हुआ मैं बड़ी खुश थी कि आज कल्कि जी कोई दिव्य सा अनुभव देंगे।

स्वप्नानुभवः- रात को मुझे स्वप्नानुभव हुआ—मेरी बड़ी बहन के रूप में दैवीय शक्ति हमारे घर आई हैं और मुझे मेरे पति को अपने साथ यू.पी. में कहीं लेकर गई है। वह एक ऐसी गंदी जगह है जहां हम चारों तरफ से घिर गए हैं। सब गलत और गंदे लोग हैं। नकली पुलिस वाले हैं। हम किसी तरह से बचते हुए भाग रहे हैं। आखिर में मैं अपने पूरे परिवार से बिछड़ जाती हूँ और मेरा फोन भी खो जाता है। इससे मेरा सबसे संपर्क टूट जाता है। मैं एक ऐसी जगह फंस गई हूँ जहां हर किसी के पास बड़ी बंदूक हैं (शायद डाकुओं का इलाका है)। मैं जगह जगह छुप रही हूँ।

फिर अचानक दिखता है मैं अपने घर सही सलामत आ गई हूँ। अपने कंप्यूटर रूम (जहाँ मासिक पत्रिका और कल्कि साहित्य का काम करती हूँ) से घूम कर अपने बैड रूम में सही सलामत आ जाती हूँ।

फिर वाणी अनुभव होता है—तुमने जो साहित्य का कार्य किया है उसके कारण कितनी बड़ी विपत्ति से तुम्हें बचाया है। इस पर मैं कहती हूँ आप हमेशा ऐसे ही करते हो जब भी मैं साहित्य का कोई कार्य करती हूँ आप कोई भयंकर सा अनुभव दिखाते हो। फिर कह देते हो देख मैंने तुझे कितनी बड़ी विपत्ति से बचाया है। मैं कैसे मानूँ? इस पर मुझे एक बहुत कड़क वाणी सुनाई देती है—

मानना पड़ेगा, क्योंकि तेरी नियति में यही है

उपचारः- सरस्वती मां-गंगा जी शुद्ध बुद्धि भक्ति के लिये 20-20 रुपये। कल्कि जी 20 रूपये मुझसे काम लेते रहो मेरे से काम बन्द मत करना।

अर्थः किस प्रकार आप चावड़ी बाजार मुकदमों से घिरे किराये के मकान से कल्कि मासिक पत्रिका के सहारे (झटके खाये हुए मामाजी के द्वारा पग-पग पर बताये कल्किजी के रास्तो द्वारा) इन्द्रापुरम अपने मकान में पहुँची हैं जिसके कई अचम्भित करने वाले सिरियल मामाजी के बार-बार कहने पर आपने मासिक पत्रिका में छापे हैं। नये मकान में आने को आप अपने भाग्य में मिला एक तोहफा समझती हैं जबकि मामाजी ने कहा यह मायावी मकान है। कभी भी जहाँ से चली हो वहीं पहुँच सकती हो क्योंकि अब आपने मासिक पत्रिका को प्रमुख नहीं गौड़ (छोटा मामूली कार्य) मानने लगी हो। अब मामाजी के शब्द आपके परिवार को सुहाते नहीं हैं। कई बार मामाजी से साहित्य के बारे में नाराज होकर फोनो पर गौर करना बन्द कर दिया था। लेकिन तभी दो-चार दिन में भगवान का कोई ऐसा कड़क अनुभव आता कि आप मामाजी को फोन करके पत्रिका का काम पुनः पूरा करा दिया करती थीं। आपका सोचना था आप इतना काम करती हैं जबकि और कोई इतना कल्कि का नहीं करता। फिर भी मामाजी की कड़वी, डराने वाली भाषा मेरी प्रभुता के विरुद्ध हैं।

इस अनुभव को भी मैंने मामाजी को शायद फोन पर बता दिया था अथवा ज्यादा तवज्जो नहीं दी। मामाजी के मुँह से सत्संग में उनके नावल्टी वाले पुराने मकान(जो उन्होंने अभी भी रखा हुआ है) कि पता नहीं कलियुग जीवन में कब कैसी उथल पुथल कर दे कम से कम वह रहकर बचपन जैसी माला, हवन तो करता रहूँगा इसलिये कल्कि समाज के सामने मैंने यह अनुभव लिखा है ताकि मैं यहाँ बनी रहूँ और कल्कि जी के दिखाये रास्तों पर चलते हुए और आगे बढ़ूं। अब जरा मामाजी के कड़वे,डरावने वचन थोड़े-थोड़े समझ में आने शुरु हो गये है कि चढ़ने में बड़ी मशक्कत करनी पड़ती है उतरा बड़ी सरलता से जाता है।

तभी सब कुछ होते हुए भी मामाजी सर्दी-गर्मी, बरसात, सुख-दुःख की परवाह किये हुये दुखिया से हँसते नये नये साथियों के साथ अमूमन नजर आते हैं।

ध्यान योग्य

जो भक्त दो कुंडीय यज्ञ करते हैं

सुश्री नेहा चौधरी (कोलकाता) को आए स्वप्नानुभव के अनुसार दो कुंडीय यज्ञ करते समय एक कटोरी में आधा चम्मच दही, हल्की चीनी व जरा सी हल्दी बुरक कर हवन कुंड के पास रखें। हवन करने के पश्चात् दो मिनट के लिए उठकर बाहर का चक्कर लगा आवें। फिर दूसरे कुंड में हवन करना शुरू कर दें। इस दही को आप परिवार में सभी को बांट सकते हैं। किसी के द्वारा नहीं लेने पर आप स्वयं यह दही ग्रहण कर लेवें।

जब भगवान श्री कल्कि का नया प्रोजेक्ट शुरू करें तो

—सुश्री नेहा चौधरी कोलकाता (9163448228)

जटा वाले नारियल पर लाल कपड़ा एवं कलावा बांध कर संकल्प कर दें और यह प्रार्थना करें हे गंगा माँ मेरा यह प्रोजेक्ट जल्दी पूरा करवा दें। मुझे सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि जी का काम करना है। प्रोजेक्ट पूरा होने के बाद इसे गंगा जी में चढ़ा दें।

माँओं को एक बार तो दुख (आंसू बहाना/रोना) झेलना ही पड़ता है

–सुश्री आभा गुप्त (9136079923)

जब राजा दशरथ ने माँओं की ममता के आगे घुटने नहीं टेके

उदाहरर्णाथ राजा दशरथ की तीनों रानियाँ विलाप, ***(बिलखती, रोती, अश्रुपात)*** करती रहीं और राजा को ताने देती रहीं कि तुम कैसे कठोर हृदय के पिता हो जो घर में सब सुविधा होते हुए कोमल छोटे-छोटे राजकुमारों को गुरुकुल में भेज रहे हो। वहाँ यह जमीन पर सोएंगे, रोज दर-दर ***(घरों)*** पर भिक्षा मांगने जाएंगे। गुरु, गुरुपत्नि की सेवा करेंगे। जबकि इनका कार्य करने के लिये यहाँ दास दासियाँ हैं। क्यों नहीं तुम गुरुजी को यहाँ बुलाकर इन्हें राजमहलों में शिक्षा दिलवाते?

राजा दशरथ

26 अप्रैल 2014 को सुश्री मेघना गोयल के तत्वाधान में श्री कल्कि नागेश्वर मंदिर अयोध्या में विराजे

लेकिन राजा दशरथ अपने फर्ज पर कायम रहे ***(परम्परा नहीं तोड़ी)*** और अपनी रानियों से व्यथित ***(दुखी)*** मन से कहा-यह मत समझो **मेरे हृदय में राजकुमारों के लिये दया नहीं है।** लेकिन मैं जानता हूँ अगर मैंने गुरुकुल में भेजकर इन्हें बाहर की दुनियाँ नहीं दिखाई तो बड़े होकर यह टूट जाएंगे ***(इनका जीवन नारकीय हो जाएगा)***। यह प्रजा के दुखों को नहीं समझेंगे। अन्तोगत्वा आज आप भगवान राम और उनके पुत्रों की वीरता वाली कथाएं श्रवण करते हैं। भगवान श्री राम के पुत्र राजा कुश द्वारा अयोध्या में सरयू घाट पर नागेश्वर महादेव मंदिर वासुकी जी को प्रसन्न करने के लिये बनवाया। वही भक्तवृंद 26 अप्रैल 2014 को भगवान श्री कल्कि मंदिर में प्रवेश करते ही प्रतिष्ठित हुए हैं। अधिक जानकारी के लिये श्री कुशाग्र (07379066665)

जब श्री राम ने कहा कलियुग की माँएं ऐसी होंगी

रामावतार में एक गाय अपने बच्चे को बहुत प्यार से चाट रही थीं और चाटते चाटते बछड़े के खून निकाल दिया। इस पर श्री राम ने कहा कि कलियुग में माँयें बच्चों को इतना छाती से लगा कर रखेंगी अर्थात् इतना लाड प्यार करेंगी कि जब तब उनके जीवन बर्बाद न हो जाएं। लेकिन इसका दोष वह सर्वदा पिता और अन्य परिस्थितियों को देंगी।

श्रीराम

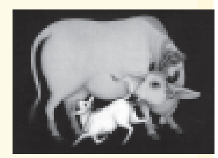

जब कृष्ण को भी अपने संस्कार विहीन कुल का संहार करवाना पड़ा

माताओं द्वारा बच्चों को सिर्फ लाड प्यार देने एवं *श्री कृष्ण के साथ बाहर की दुनियाँ राजा दशरथ की तरह न दिखाने देने के दुष्परिणाम के कारण कृष्ण के परिवार के बालक बालिकाएं व्यसनी हो गए। श्री कृष्ण ने ऋषि द्वारा श्राप दिलाकर गो लोक ***(पराधाम जाते हुए)*** सबका संहार ***(मरवा)*** करवा दिया। माता रुकमणी सहित सभी रानियों ने बिलखते ***(दुखी-रोते-अश्रुपात करते)*** हुए श्री कृष्ण से बहुत आग्रह किया कि आप ऋषि के श्राप को बदलवा दो। इसपर श्री कृष्ण ने कहा कि मैं ऋषि के श्राप को नहीं बदलवा सकता। हे रानियों धैर्य से मेरी मजबूरी समझो:-

श्रीकृष्ण

मैं तो पैदा ही अकाल मृत्यु के लिए हुआ था कंस मामा मेरे सात भाई बहिनों को पहले ही मार चुका था। मेरा मामा मेरे को मारने का इंतजार कर रहा था। मैं अमावस की काली रात का पैदा हुआ। कैसे कैसे मैंने अमावस्याओं की काली रातों को ***(पूतना, केशी राक्षस, कालिया नाग, अरिष्ट, पागल हाथी, महाभारत आदि को)*** पूर्णिमा की रोशनी में बदला। लेकिन तुमने मेरी इन कलाओं और क्षमताओं, चालबाज रनछोर रणनीतियों को समुद्र में महल बनाकर रहते हुए भी नहीं समझा जो जीवन में अत्यंत सीखने योग्य थीं अफसोस नहीं समझा। दूसरे मुझे ही उल्हाना देती रही। बच्चों को ऐसे संस्कार देने तो दूर-उन्हें मुझ से भी दूर रखा। तुम सब उनको सुख ऐश्वर्य देने में ऐसी खोई रहीं कि तुम्हें ही नहीं मालूम चला कि कब कब हमारे सब बच्चे किशोरअवस्था में प्रवेश करते चले गए। **हे रानियों** आज मेरे पास सब कुछ है लेकिन मेरे अनुरूप संस्कारी, धर्म-समाज हितकारी, वैभवशाली, नीतिज्ञ बच्चे मेरे साथ नहीं हैं। खाना पीना बच्चे पैदा करना यह तो हर योनि में जीव जंतु, कीड़े मकोड़े भी करते हैं ***(गजेन्द्रमोक्ष के अनुसार यमराज भी सिर्फ़ मनुष्यों के लिये आते हैं बाकी जीव जन्तु पशु पक्षियों के लिये नहीं आते। उनकी तो समय सीमा (आयु-मृत्यु) पैदा होने के समय ही निश्चित हो जाती है। समय पूरा हुआ और वह अपनी अगली योनी में जन्म ले लेते हैं)।*** लेकिन चौरासी लाख योनी के बाद इस मानव दुर्लभ शरीर से समाज हितकारी कर्म करना ही जीवन का सार है। हे रानियों राजा धृतराष्ट्र (जो जन्म से नेत्रहीन थे) की शादी पर उनकी पत्नी गांधारी (बुआ) ने भावुकता में स्वयं भी

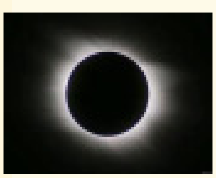

मैं तो पैदा ही अमावस्या की काली रात को हुआ था

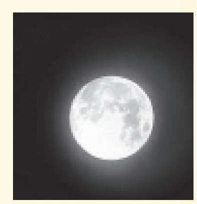

कैसे मैंने अमावस्या को पूर्णिमा की रात में बदला

नेत्रहीन रहने के लिये अपनी आँखों पर पट्टी बांधने की प्रतिज्ञा कर ली। लिहाजा वह अपने पुत्र दुर्योधन व मुँह बोले सौ पुत्रों को धार्मिक संस्कार न दे पाई। सब अधर्मी व व्यसनी हो गए। परिणाम उनके सामने ही सब मर गए। उन 101 बेटों की मृत्यु पर विलाप करते हुए उन्होंने **पुनः भावुकता में प्रतिज्ञा करी कि मैं अब से कुछ जलपान न करने की प्रतिज्ञा लेती हूँ।** इस पर मैंने कहा बुआ यह संभव नहीं है। उन्होंने कहा कृष्ण देख-लेना मैं कुछ ग्रहण नहीं करूंगी। लेकिन हे रानियों थोड़े ही समय बाद बुआ गांधारी ही अपने बेटों के शवों को उठा उठाकर उन पर चढ़कर डाली पर से भूख मिटाने के लिये अंगूर तोड़ रही थी। अत: अपने व समाज के लिये बच्चों में संस्कार के प्रति हमें बहुत ही सतर्क रहना पड़ता है। हे रानियों मैंने अपने को इन्हीं कर्मों संस्कारों से बनाया है। तुमने इसे क्यों नहीं जाना और बनाया। समाज व राष्ट्र के लिए विवेकानंद की तरह गौरव का कारण बनेंगे।

कल्कि साहित्य समाप्ति के कगार पर

भगवान श्री कल्कि के प्रचार का सर्वश्रेष्ठ साधन साहित्य है। इसके लिये तो श्री गुरु जी ने अपने लेख स्त्री शिक्षा और बालकों की शिक्षा का ध्येय क्या होना चाहिए (पृष्ठ-66 महाक्रांतिकारी की खोज) में यहाँ तक लिखा कि प्रत्येक बालक व बालिका को यदि दो घण्टे अध्ययन में लगें तो दो घंटे जप अवश्य करना चाहिए। इस तथ्य पर बीसीयों बार कल्कि जी ने भी मोहर लगाई है। श्री कल्कि बाल वाटिका पिछले कई वर्षों से जी तोड़ कोशिश कर रही है कि कल्कि जी की दिन-प्रतिदिन घटित हो रही अलौकिक लीलाओं के दस्तावेज लगातार समाज तक पहुँचते रहें। लेकिन बार-बार मार्ग अवरुद्ध हो जाता है।

प्रश्न:- कल्कि बाल वाटिका कल्कि समाज को मुफ्त तो साहित्य देती नहीं है, उन्हें प्राय: साहित्य बेचते हुए या पुस्तकों के पैसे लेते हुए देखा गया है। फिर मार्ग अवरुद्ध क्यों हो जाता है।

उत्तर:- जहाँ भी कल्कि जी छावनी स्थापित (मूर्ति लगाने) के लिये /जगह लेने के लिये मैं कल्कि मूर्ति प्रभारी बातचीत शुरु करते हैं वहाँ उन्हें खुले दिल से कल्कि जी का साहित्य वहाँ के ट्रस्टियों-गण्मान्य को कौन है कल्कि? क्यों आ रहे हैं कल्कि? बताने, समझाने के लिये उपहार स्वरूप में देने पड़ते हैं। यह क्रम तब तक चलता है जब तक वहाँ मूर्ति स्थापित नहीं हो जाती है। साथियों 7 नवम्बर 2009 से 7 जुलाई 2014 तक भगवान श्री कल्कि जी की 60 मूर्तियाँ स्थापित हुई हैं। ऐसे लोगों की संख्या अभी 15त्र से भी कम है जो पूरे पैसे देकर कल्कि जी का साहित्य खरीदते हैं। हाल तो मिलता नहीं मिलता भी है तो दुकानदार भी 30त्र से 40त्र कमीशन लेता है। हमारी प्रिंटिंग कीमत इसलिये भी ज्यादा आती है कि हम 2-3 हजार से ज्यादा प्रतियाँ नहीं छपवाते। अगर कहीं यही प्रतियाँ 20-30 हजार छपें तो कीमत आधी से जरा ज्यादा होगी।

खेल खेल में संस्कार रोपण कार्यशाला

स्थान : 1903, पहली मंजिल चांदनी चौक, दिल्ली-6

दिनांक : 28 सितंबर 2014, रविवार

श्री कल्कि सहस्त्रनाम हवन : प्रात: 10 बजे

महामंत्र मुकाबला एवं कार्यशाला 11 बजे से 2 बजे तक

इतनी शक्ति हमें देना दाता मन का विश्वास कमजोर हो ना

रमणी अग्रवाल स्वप्नानुभव में दिखाए अनुसार संचालिकाओं एवं बालक बालिकाओं को सिखाएंगी

* भगवान से शक्तियों का मांगना और उनका आभार प्रगट करना कि आप हमें स्वप्नानुभव द्वारा सहारा दे रहे हैं देते रहें अपनी कृपा बना रहे हैं बनाते रहें।

संपर्क : रमणी अग्रवाल-9212216251, शलभ गोयल-9810066506

सम्भल सहस्त्रनाम हवन की महानतम देन

सम्भल ग्राम के चामुंडा मंदिर, हल्लू सराय में श्री कल्कि बाल वाटिका की 24 अगस्त 2014 को सुश्री मुक्ता शर्मा (अधिवक्ता, उच्चतम न्यायालय, सुप्रीम कोर्ट) एवं श्री काजल वार्ष्णेय (क्रिमिनल लॉयर) की संरक्षिता में छोटे-छोटे बच्चों में संस्कार रोपण हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें एल.सी.डी. की सहायता से ऑडियो वीडियो विजन सहित दीदी (देविका वार्ष्णेय) व भैया (कुलदीप) का चयन किया गया। बालक व बालिकाओं ने स्वेच्छा से श्री हनुमान जी को अपना गुरु बनाया।

भगवान श्री कल्कि का महामंत्र

जय कल्कि जय जगत्पते पदमापति जय रमापते

Registered with the Registrar of Newspaper for India under Licence No. Delhi-N/2005/15596 Postal D. No. DL (DG)-11/8061/2012-2014

publication date 1-30 september मूल्य 10 रूपए posting date1-8 september सितंबर 2014 weight-25 grams

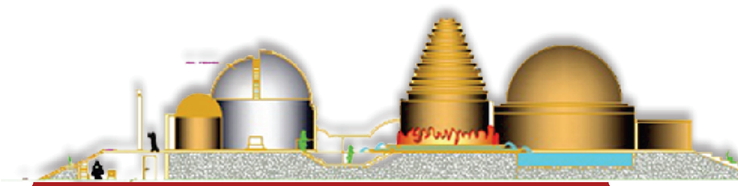

कल्कि जी की यह मूर्ति मलेशिया में बाथु केवस में स्थापित है कार्तिकेय जी को वहाँ बाथु के नाम से जाना जाता है।

कल्कि संग्रहालय में आप देखेंगे

*भारत भूमि पर हमारा जन्म हमारे सौभाग्य की गाथा गाता है * भारत भूमि श्री हरि नारायण की भूमि है * भगवान विष्णु के दशावतार * अभी कल्कि क्यों? * कलियुग के लक्षण * कल्कि जी ने अवतार क्यों लिया? * हनुमान जी/रामकृष्ण परमहंस हमारे गुरु क्यों? * प्राचीन भारत एवं आधुनिक भारत में अंतर * कल्कि जी की पुकार क्यों करें? * कल्कि जी की स्वप्नानुभव लीला * कल्कि की पुकार ही सार है * कल्कि जी की भक्ति कैसे करें? * कल्कि जी का प्रचार कैसे करें? * धर्म/भक्ति/ज्ञान और कल्कि * श्री कल्कि साहित्य*

ऑडियो सी.डी.

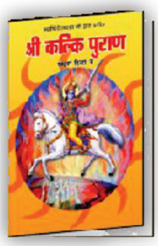

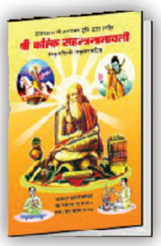

डी.वी.डी.

यू.एस.बी. | पैन ड्राइव

मंत्र बॉक्स

श्री कल्कि जी का शुभ का खजाना

अपनी आमदनी में से कम से कम एक प्रतिशत अधिक से अधिक दस प्रतिशत रुपया भगवान श्री कल्कि के शुभ के खजाने में डालें।

इस खजाने को कहाँ लगाएं?—श्री कल्कि बाल वाटिका की संस्कार रोपण कार्यशालाओं, श्री कल्कि जी के हवनों, सत्संग, कल्कि जी के उपचारों में, कल्कि जी के महोत्सवों-कीर्तन, अनुभव गोष्ठी, मूर्ति स्थापना, शोभा यात्रा, कल्कि जी के उत्सवों में आने जाने मे, कल्कि जी के आगामी बनने वाले संग्रहालयों में एवं कल्कि जी के अन्य प्रचार के कार्यों में लगाएं। साहित्य में कम से कम 25 से 30 प्रतिशत अवश्य लगाएं, इससे आपके घर एवं व्यापार के प्रगति के मार्ग योजनाबद्ध तरीके से खुलते चले जाएंगे।

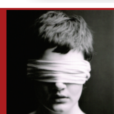

अंधा है वह दिवस जहाँ आदित्य नहीं है
अंधा है वह धर्म जिसमें साहित्य नहीं है

कल्कि साहित्य समाप्ति के कगार पर

कल्कि जी का शुभ का खजाना

बन पड़े तो अपने शुभ के रुपयों में से सहयोग साहित्य प्रभारियों के पास भेजें

मेघना गोयल-916377829 पूजा गुप्त-9811858723 सुषमा गोयल-9899698240

रेनू बंसल-9818000004 रश्मि गुप्त-9711108050 मामाजी-9136377829

कल्कि जी का शुभ का खजाना

श्री कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशालाएं

*** दिल्ली विश्वविद्यालय* नोएडा * पंजाबी बाग * पटपड़गंज * गगन विहार * यमुना विहार * महावीर नगर * ग्रीन पार्क**

श्री कल्कि बाल वाटिका

के सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें—

☎ 9312533445, 9136377829, 9811858723

न करने का न करवाने का झंझट बस फोन करते रहें जब तक काम पूरा न हो मंदिरों में भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति, पोशाक, लाईट प्रभारी :

हर्षित गुप्ता, (मनु) 9999885277) अंकित गड़ौदिया (9968154304)

राहुल अग्रवाल (9891879718) अलका गोयल (9811281271)

❖पालनपुर ❖देहरादून ❖असरोही ❖कोलकाता ❖चेन्नई

1903/3, पहली मंजिल, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006 सम्पर्क : 23886646, 23866661

हाउस नं. 4116, कसेरू वालान, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, सम्पर्क : 23587079

सी 0-2/16, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110035

कॉलेज कम्पाउन्ड, गीता सोसाईटी, पालनपुर : 385001, गुजरात, सम्पर्क : 02742-258068, 09824968440

जी 97, नेहरु कालोनी, देहरादून (उत्तरांचल), सम्पर्क : 0135-2671643, 09837343560

2 नम्बर, हाईट रोड, लिलुआ, हावड़ा-711204 (कोलकाता)

आभार/Ack.: श्री कल्कि पुराण, ऋग वेद, ऋषि प्रसाद, स्वामी राम सुखदास, नवभारत टाइम्स

योगेश प्रकाश गुप्ता, दिल्ली द्वारा प्रकाशित व अन्य बालकों के ज्ञानवर्धन हेतु

प्रिंटर्स : शिवानी ऑफसैट, ए-36 नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (यू.पी.) पारस प्रिंटिंग प्रैस, पटपड़गंज, नई दिल्ली